International Journal of Applied Research 2015; 1(8): 179-181

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(8): 179-181
www.allresearchjournal.com
Received: 02-05-2015
Accepted: 03-06-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा,
कांगडा, हि प

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा,
कांगडा, हि प

रंगभूमि उपन्यास में गांधी दर्शन

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

आधुनिक गद्य की सर्वाधिक सशक्त और लोकप्रिय विधा उपन्यास है। वास्तव में यह गद्य साहित्य का एक ऐसा रूप है जिसका आधार कथा है। प्रेमचन्द ने उपन्यास को पारिभाषित करते हुए लिखा है– मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूं।मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। रंगभूमि उपन्यास सन् 1925ई में प्रकाशित हुआ। साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह उक्ति रंगभूमि में सत्य प्रमाणित होती है।रंगभूमि उपन्यास में प्रेमचन्द ने महात्मा गांधी के रचनात्मक दृष्टिकोण तथा सत्याग्रह के साधन को अन्याय के विरूद्ध शस्त्र के रूप में प्रयोग किया है। सेवा, त्याग, बलिदान, प्रेम देशी रियासतों की स्थिति, धार्मिक सहिष्णुता, युवकों के आदर्श, शहरी शिक्षित लोगों के दृष्टिकोण आदि का सम्यक् निरूपण करने के लिए विनय और सोफिया की प्रासंगिक कथा का नियोजन किया है।

युगके सर्वांगीन सत्य का यथार्थ चित्रण–रंगभूमि उपन्यास पराधीन भारत में आजादी की चेतना का उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द भारत के राजनीतिक यथार्थ का परिचय देना चाहते थे ।वे स्वयंस्वाधीनता सेनानी थे और महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी छोड चुके थे।

तात्कालीन राजनीतिक चित्रण– प्रेमचन्द इस उपन्यास से तात्कालीन राजनीतिक दुरावस्था, दमन, अत्याचार, शासनव्यवस्था का नग्न परिचय देकर भारत वासियों को तथा दुनिया को यह बताना चाहते थे कि अंग्रेजी शासन में कानून तथा न्याय की कैसी दुर्गति थी।इस उपन्यास में भारत के राजनीतिक वातावरण को यथार्थ रूप में वर्णित किया है।

शासन व्यवस्था– ब्रिटिश भारत में दोहरी शासन व्यवस्था में कहीं भी योग्य और प्रशासन नहीं था। राजा, नवाब किसी भी प्रकार से सूबे के गवर्नर, कमिश्नर तथा हाकिम जिला को राजी रखना ही अपना कर्तव्य समझते थे। देशी रियासतों की हालत तो और भी खराब थी जहां दमन, आतंक, भेंट, बेगार, जुर्माना, कारावास, यातना आदि से जनता का जीवन कठिन हो रहा रहा था। इस उपन्यास में रियासत के दीवान नीलकण्ठ के अत्याचारों एवं राजा की वास्तविक कठपुतली जैसी स्थिति को प्रकट करके सत्य को सामने ला कर रख दिया है। राष्ट्र की दशा के प्रतिचेतना–ब्रिटिश भारत में स्वतंत्रता तथा देश की दशा के प्रति कुछ चेतना अवश्य दिखाई देती है किन्तु वे लोग भी जो देश धर्म पर बलिदान होना चाहते थे अपने कायों और उद्देश्यों को समाज की सेवा तक ही सीमित रखते थे और किसी भी प्रकार के राजनीतिक आन्दोलनो से अपने आप को दूर ही रखते थे ताकि अंग्रेज सरकार और अफसरों की कोप दृष्टि से बच सकें।

अंग्रेजी न्याय व्यवस्था– प्रेमचन्द ने अंग्रेजी न्याय व्यवस्था और कानून के खोखलेपन की धज्जियां उडते देखा था। अंग्रेजों का कानून और उन की स्वार्थ की न्याय पद्धति ब्रिटिश सरकार के स्वाथों से ही जुडी हुई थी उनमें निष्पक्षता और सार्वजनिक हित का लक्ष्य नहीं थां। सम्पूर्ण उपन्यास में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष है सूरदास की जमीन कारखानेदार खरीदना चाहता था।सूरदास जमीन नहीं देना चाहता व उद्योगपति की स्वार्थों की पूर्ति के लिए जमीन का अधिग्रहण यही न्याय प्रणाली थी।

अन्यायी शासन को गांधी गिरि से अपदस्थ करना– प्रेमचन्द का उद्देश्य इस उपन्यास के द्वारा पराधीन भारत से ब्रिटिश सरकार के अन्याय, अनीति, तथा अत्याचारों का यथार्थ परिचय भारतीय जनता को देना था ताकि अन्याय के विरूद्व जनता में चेतना उत्पन्न हो और संगठित जनता ऐसे अन्यायी शासन को अपदस्थ करने का संकल्प कर सके। थोडे समय के उपरान्त यह फल देखने को

भी मिला चाहे वह सूरदास एवं सुभागी प्रकरण हो या मजदूरों के लिए आवास गृह बनवाना हो, लोगों ने अन्याय के विरूद्व आन्दोलन कारियो के साथ कदम से कदम मिलाकर एकजुटता का प्रमाण दिया ।

मजदूर समस्या – इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कारखानों के बनने से मजदूर काम की चाह में गांव से शहर की ओर चले आएंगे और गांव के गांव खाली हो जाएंगे इस तरह शहरों पर आवादी का बोझ पडेगाा। आज यह समस्या सामने दिखाई दे रही है। महात्मा गान्धी युग द्रष्टा थे उन्होंने अंग्रेजों की इस नीति का विरोध किया था। मुंशी प्रेमचन्द ने उपन्यास के माध्यम से गांधी जी के विचारों को महत्व दिया।

गांधी वादी विचार धारा का चित्रण – रंगभूमि उपन्यास सन् 1925 में प्रकाशित हुआ था। यह काल भारत के राजनीतिक इतिहास में महात्मा गांधी के वर्चस्व का काल था। सन् 1916 ई में ही महात्मा गांधी ने भारत की स्वाधीनता के लिए किए जा रहे आन्दोलन का नेतृत्व अपने हाथ में लिया था। इस उपन्यास में गांधी द्वारा स्थापित लक्ष्य और साधनों का प्रेमचन्द निरूपण करना चाहते थे। [6] महात्मा गांधी ने आजादी की लडाई को एक अनोखा मोड दिया था।

लेखक का भावनात्मक प्रकटीकरण – इस उपन्यास के द्वारा प्रैमचन्द ने गांधीवादी विचारधारा का चित्रण करने के साथ साथ स्व अनुभव भी यथार्थ रूप में प्रकट किया है। वे स्वयं भी महात्मा गांधी के सत्याग्रहों से आकर्षित हो कर सत्याग्रह संग्राम में शामिल हुए थे। [7] उन पर महात्मा गांधी की विचारधारा का पर्याप्त प्रभाव था जिसे उन्होंने अपने इस उपन्यास में यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है।

अहिंसक सत्याग्रह इस उपन्यास में महात्मा गांधी द्वारा प्रणीत आजादी की लडाई के लिए अहिंसक सत्याग्रह में विश्वास व्यक्त किया गया है। सूरदास अपनी जमीन नहीं देना चाहता व सरकार एवं उद्योगपति मिलकर कानून बनाकर सूरदास की जमीन छीन लेता है किन्तु सूरदास मुआवजा स्वीकार न करके सत्याग्रह का ऐलान करता है व इसमें वह सफल भी होता है। जब सोफिया के आग्रह पर क्लार्क सूरदास की जमीन लौटा देता हैं। यह अहिंसक सत्याग्रह की महत्व पूर्ण घटना है। [8]

न्याय.शक्ति का महत्व. रंगभूमि उपन्यास में न्याय के लिए प्राणप्रण से अहिंसक सत्याग्रह कर गांधीवादी प्रणाली का प्रतिनिधित्व किया गया है। पांडेपुर के लोगों के घर छीनने के प्रकरण में सूरदास कहता है कि.–यह हमारा घर है किसी के कहनेसे नहीं छोड सकते। [9] जबरदस्ती जो चाहे निकाल दे न्याय से नहीं निकाल सकते ।न्याय शक्ति का इस प्रकरण में गांधी जी का प्रभाव परिलक्षित होता है।

आत्मबल का परिचय– महात्मा गांधी ने अपने आन्दोलनों में अहिंसा व आंत्मबल को सर्वोच्च स्थान दिया है। [10] चौरी–चौरा में आन्दोलनकारी सत्याग्रहियों ने कुछ स्त्री पुरुषों को जला कर मार डाला था तब गांधी जी ने आंदोलन वापिस ले लिया था।उसी प्रकार सूरदास भी गांधी जी के दर्शन के अनुसार सूरदास भी अहिंसा सिद्धान्त का उपासक है। जब जनता पर सरकारी हिंसा का खतरा था तब वह भैरों के कंधे पर बैठ कर जनता को आत्मबल का परिचय देता है।

औद्योगिकरण का विरोघ– महात्मा गांधी ने हस्तशिल्प की कीमत पर औद्यौगीकरण का विरोध किया था। [11] इस उपन्यास में औद्यौगीकरण की भयावहता के प्रभाव को बहुत अच्छे ढंग से उभारा गया है। सूरदास अपनी जमीन सिगरेट के कारखाने को इसलिए नहीं बेचना चाहता क्योंकि देहात के किसान अपना काम छोड कर मजदूरी के लालच में घर से पलायन करेंगे शहरों में दबाब बढेगा। इसके साथ अनेक कुरीतियों का प्रचार होगा। औद्यौगीकरण से बेरोजगारी , प्रदूषण , नैतिक संकट, शराब, जुआ आदि व्यसनों के प्रसारण के प्रसार तात्कालिक समाज में भी आशंका थी। कुटीर उद्योगों तथा हस्तशिल्प की कीमत पर औद्यौगीकरण का विरोध किया था। [12] प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में मुंशी ताहिर अली द्वारा जिल्दसाजी का धन्धा अपनाने की व्यवस्था को कुटीर उद्योग की सफलता ही बताया है। इस व्यवसाय को अपनाकर ताहिरअली का परिवार सुखी हो गया।

पंचायती व्यवस्था में विश्वास– महात्मा गांधी राजशक्ति के स्थान पर पंचायत की शक्ति में विश्वास करते थे। इस उपन्यास में पाण्डेपुर के लोग अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए परस्पर मिल बैठकर बात करते हैं पंचायत जोडते हैं। इसी प्रकार सूरदास को जब सरकारी अदालत एक झूठे प्रकरण में दोषी ठहरा कर जुर्माना करती है तो सूरदास जनता से पंचो से दोबारा निर्णय प्राप्त करता है। [13] सूरदास ने अपने पंचों के भीतर निवास करने वाले परमेश्वर को जगा दिया और अपने ही बच्चों के विरुद्ध अपराध के लिए दण्ड की व्यवस्था में पहल की ।

कुटीर उद्योगों का समर्थन – महात्मा गांधी ने कुटीर उद्योगो तथा ग्रामोद्योगों का पूर्णसमर्थन किया था व भारत के कुटीर उद्योगों तथा हस्तशिल्प की कीमत पर औद्यौगीकरण का विरोध किया था। [12] प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में मुंशी ताहिर अली द्वारा जिल्दसाजी का धंधा अपनाने की व्यवस्था को कुटीर उद्योग की सफलता ही बताया है। इस व्यवसाय को अपनाकर ताहिरअली का पूरा परिवार सुखी हो गया।

पंचायत व्यवस्था में विश्वास– महात्मा गांधी राजशक्ति के स्थान पर पंचायत की शक्ति में विश्वास करते थे। इस उपन्यास में पाण्डेपुर के लोग अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए परस्पर मिल बैठकर बात करते हैं। पंचायत जोडते हैं।इसी प्रकार सूरदास को जब सरकारी अदालत एक झूठे प्रकरण में दोषी ठहरा कर जुर्माना करती है तो सूरदास जनता से तथा पंचा से दोबारा निर्णय प्राप्त करता है।[13] सूरदास ने पंचो के भीतर निवास करने वाले परमेश्वर को जगा दिया और अपने ही बच्चों के विरुद्ध अपराध के लिए दण्ड की व्यवस्था में पहल की गई।

नशा– व्यसन का विरोध –महात्मागाधी ने शराब बन्दी, धूम्रपान निषेध का समर्थन तथा अन्य सभी प्रकार के नशों का विरोध किया था। इसमें सूरदास भैरों को ताडी की दुकान के स्थान पर लकडी का व्यवसाय करने को तैयार करता है। कारखाने का इसीलिए विरोध करता है कि उससे शराब जुआ धूम्रपान तथा अन्य प्रकार के व्यसन वैश्यावृत्ति आदि भी पनपेंगे।

नारी–सम्मान – महात्मा गांधी जी ने नारी को सम्मान एवं समानता की दृष्टि से देखने का अभियान चलाया था। [14] इसमें सुभागी पर होने वाले पति के अत्याचारों के विरुद्ध मानवीय संवेदना उभारी गई है। सुभागी की इज्जत को सूरदास ने समस्त गांव की बहन, बेटी, की इज्जत के समान समझा।

सम्पत्ति पर समाज का स्वामित्व– गान्धी जी ने सम्पत्ति पर समाज का स्वामित्व स्वीकार किया था। व्यक्ति तो उसका संरक्षक मात्र है। प्रेमचन्द ने इस सिद्धान्त की ओर संकेत किया है। सूरदास कहता है कि मेरी चीज वही है जो मैंने अपने बाहु बल से पैदा की हो, यह धरोहर है मैं इसका मालिक नहीं हूं। इस तरह इस उपन्यास में पूर्ण रूप से गांधी जी के दर्शन का दिग्दर्शन

होता है। प्रेमचन्द के अनेक उपन्यास गांधी दर्शन से प्रभावित हैं।

संदर्भ सूचि

1. प्रेमचन्द और गांधी वाद रामदीन गुप्त, प्रथम संस्करण पृ 73
2. साहित्य और यथार्थ शोध पत्र पृ 73
3. हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना का स्वरूप और विकास सरला मिश्रा 1974
4. प्रेमचन्द –व्यक्ति और साहित्यकार मन्मथनाथ गुप्त पृ416
5. हिन्दी उपन्यासों में गाधी वाद अरुणा चतुर्वेदी 1977
6. सम्नूर्ण गांधी वाडमय भाग 17
7. हिन्दी उपन्यासों में गाधीवाद अरुणा चतुर्वेदी 1977
8. हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय विवेचन चंडी प्रसाद
9. प्रेम चन्द के उपन्यासों पर गांधी विचार धारा का प्रभाव उर्मिला रानी
10. प्रेमचन्द और रंगभूमि राकेश,प्रकाशन केंद्र लखनउ
11. हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष ज्योत्सना श्रीवास्तव
12. प्रेमचन्द ओर गांधी वाद रामदीन गुप्त प्रथम संस्करण
13. प्रेम चन्द और हमारा स्वाधीनता संग्राम डा रेखा गुंजन
14. प्रेम चन्द–साहित्यिक विवेचन पृ 17 ,18